सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

मुर्गियों के प्रमुख रोग एवं रोकथाम

पशुपालन विभाग, राजस्थान, जयपुर

(राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत प्रकाशित)

मुर्गियों में टीकाकरण कार्यक्रम

पक्षी की उम्र	रोग का नाम	टीकाकरण विधि
लेयर (अण्डे देने वाली मुर्गियां)		
1 दिन	मेरेक्स	त्वचा में
7 दिन	रानीखेत	आंख/नासाछिद्र में
14 दिन	गम्बोरो	पीने के पानी में
21-25 दिन	संक्रामक ब्रोंकाइटिस	आंख/नासाछिद्र में
28 दिन	रानीखेत	पीने के पानी में
6 सप्ताह	फाउल पॉक्स	विंग वेब में
10 सप्ताह	रानीखेत	त्वचा में
12 सप्ताह	गम्बोरो	पीने के पानी में
13 सप्ताह	संक्रामक ब्रोंकाइटिस	पीने के पानी में
19 सप्ताह	रानीखेत, गम्बोरो, संक्रामक ब्रोंकाइटिस	माँस में
ब्रॉयलर (माँस वाली मुर्गियां)		
1 दिन	मेरेक्स	त्वचा में
7 दिन	रानीखेत	आंख/नासाछिद्र में
14 दिन	गम्बोरो	पीने के पानी में
28 दिन	गम्बोरो	पीने के पानी में

सुरक्षित मुर्गीपालन के लिए कुछ उपाय

मुर्गे व मुर्गियां रानीखेत, गम्बोरो और बर्ड फ्लू जैसी कई बीमारियों के प्रति संवेदनशील है। ये बीमारियाँ दूषित पानी से अथवा प्रभावित पक्षी के मल मूत्र, पंखों आदि के जरिये पूरे झुण्ड को बड़ी तेजी से प्रभावित कर सकती है।

मुर्गीपालन से जुड़े होने के नाते आप अच्छी तरह जानते हैं कि अपने पक्षियों को इन बीमारियों से बचाना कितना महत्वपूर्ण है? अपने पक्षियों के साथ-साथ स्वयं के बचाव के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाये :-

दूरी बनाये रखें

अपने पक्षियों को बाड़े में बन्द रखें। केवल मुर्गे-मुर्गियों की देखभाल करने वाले व्यक्ति को ही पक्षियों के पास जाने देवें, अनावश्यक लोगों को बाड़े में प्रवेश न करने दे तथा अपने मुर्गे-मुर्गियों को दूसरे पशु-पक्षियों के सम्पर्क में न आने देवें।

साफ-सफाई रखें

आपके बाड़े में और उसके आसपास के क्षेत्र में सफाई बहुत जरूरी है जिससे जीवाणु और विषाणुओं के प्रकोप से बचा जा सकता है। पक्षियों के बाड़ों को साफ-सुथरा रखें और पक्षियों के आहार व पानी को रोजाना बदलें। अपनी कुक्कुट शाला/बाड़े को नियमित रूप से संक्रमण मुक्त करते रहे।

अपने कुक्कुट शाला में बीमारियों को प्रवेश करने से रोकें

अपने आपकी और बाजार व अन्य फार्मों अथवा पक्षियों के सम्पर्क में आने वाली हर चीज की साफ-सफाई रखें। नये पक्षियों को कम से कम 30 दिन तक अपने स्वस्थ पक्षियों से दूर रखें। बीमारी को फैलने से रोकने या बचाव के लिए मुर्गियों के सम्पर्क में आने से पहले और बाद में अपने हाथों, कपड़ों और जूतों को धोवे तथा संक्रमण मुक्त करें।

बीमारी उधार न लें

यदि आप अन्य फार्मों से उपकरणों, औजारों या मुर्गियों को उधार लेते है तो अपने स्वस्थ पक्षियों के सम्पर्क में आने से पहले भलीभांति उनकी सफाई करें और संक्रमण मुक्त करें।

लक्षणों पर नजर रखें

अपने पक्षियों पर नजर रखें। यदि पक्षी अधिक मर रहे हैं, आंखों, गर्दन और सिर के आसपास सूजन है, सिनक रहा है, पंखों, कलंगी और टांगों का रंग बदल रहा है या पक्षी अण्डे कम देने लगे हैं तो ये सब खतरे के संकेत है। पक्षियों में अचानक कमजोरी, पंख गिरने और हरकत कम होने पर नजर रखें।

बीमार पक्षी की सूचना

अपने पक्षियों की हर एक सामान्य बीमारी अथवा मौत की सूचना तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सालय को देवें।

पशुपालन विभाग

मुर्गियों के प्रमुख रोग एवं रोकथाम

निदेशक, पशुपालन विभाग
राजस्थान, जयपुर

प्रकाशक :

निदेशालय, पशुपालन विभाग, राजस्थान

पशुधन भवन, टोंक रोड़, जयपुर-302015

फोन नं. 0141-2743492, 2742243, 2742984 फैक्स नं. 0141-2743267

Website : www.animalhusbandry.rajasthan.gov.in

(राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत प्रकाशित)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	स्वस्थ मुर्गियों के लक्षण	1
2.	अस्वस्थ मुर्गियों के लक्षण	1
3.	रोगों से बचाव हेतु सामान्य जानकारी	2–3
4.	बर्ड फ्लू रोग	4–5
5.	रानीखेत रोग	6–8
6.	फाउल पॉक्स	9
7.	इन्फेक्शियस ब्रोन्काइटिस	10
8.	मैरेक्स रोग	11
9.	गम्बोरो रोग	12
10.	इन्फेक्शियस लेरिंगो ट्रेकियाइटिस	13
11.	लीची रोग	14
12.	इन्फेक्शियस कोराइजा	15
13.	फाउल कॉलरा	16
14.	पुलोरम रोग	17
15.	ई–कोलाई संक्रमण	18–19
16.	फाउल टाइफाइड	20
17.	मुर्गियों में परजीवी रोग	21–22
18.	कॉक्सीडियोसिस रोग	23–24
19.	एस्परजिलोसिस रोग	25
20.	क्रानिक रेस्पाइरेट्री रोग	26

स्वस्थ मुर्गियों की पहचान

- सामान्य वजन, चैतन्यता, फुर्तीलापन, हाथ से पकड़ने पर संघर्ष करना तथा उठाते समय टांगों में प्रचलन शक्ति का आभास होना।
- चेहरा भरा हुआ,नासिका साफ व म्यूकस रहित, आंखों में ज्योति और अधिक प्रकाश होने पर तुरन्त नेत्रों का व्यवस्थापन होना।
- कलंगी व गलकम्बल साफ, चमकदार एवं दीप्त लाल रंग की होती है।
- पंख साफ–सुथरे एवं व्यवस्थित, चमड़ी चमकदार एवं पिगमेंट वाली होती है।
- टांगे समान, चमकदार, साफ व भरी हुई होती है।
- मुर्गियां बराबर दाना खाती है, पानी पीती है तथा क्रॉप भरी हुई होती है।
- बींट–सफेद रंग लिये हुए मटमैले भूरे रंग की बंधी हुई होती है।

अस्वस्थ मुर्गियों के लक्षण

- वजन में कमी, सुस्ती एवं उदासी, उठाते समय संघर्ष न करना, सांस लेते समय व्याकुलता तथा शारीरिक तापमान कम या अधिक होना।
- पेट फूला हुआ या जल से भरा हुआ, नासिका में म्युकस, नेत्र सुस्त व सूजे हुए होना।
- कलंगी सिकुड़ी या मुरझाई हुई पीले या नीले रंग की एवं गलकम्बल में सूजन का होना।
- पंख झुके हुए मैले से रंग के तथा चर्म में सूजन–सी दिखाई देना।
- टांगों में सूजन का मिलना तथा लंगड़ा कर चलना।
- आहार उपयोग कम या बन्द तथा अधिक प्यास लगना।
- हरे, पीले, सफेद–रंग की बींट, दस्त के रूप में पतली बीट होना।

रोगों से बचाव हेतु
सामान्य जानकारियां

- ❒ कुक्कुट फार्म में स्वच्छता एवं कीटाणुनाशन की प्रक्रिया से ही रोगों से बचाव किया जा सकता है।

- ❒ कुक्कुट फार्म पर चूजे लाने से पहले यह सुनिश्चित करें कि जिस हेचरी से चूजे लेने हैं, वहां गत तीन माह के दौरान किसी प्रकार का रोग न हुआ हो।

- ❒ कुक्कुट घर के प्रवेश द्वार पर फुट बाथ हेतु सोडियम हाइड्रोक्साइड का घोल रखें।

- ❒ फार्म के मुख्य प्रवेश द्वार पर वाहन को कीटाणु रहित करने के पश्चात् ही परिसर में प्रवेश करने दिया जाये।

- ❒ आगन्तुक के कुक्कुट फार्म में प्रवेश पर नियन्त्रण रखें। यदि प्रवेश आवश्यक हो तो गमबूट/शू–कवर, डिस्पोजेबल कपड़े, मास्क आदि पहना कर व हाथ साबुन से धोने एवं कीटाणु नाशक घोल (लाल दवा, डिटोल, सेवलोन आदि) से कीटाणु रहित करने के पश्चात् प्रवेश करने दिया जावे।

- ❒ कुक्कुट फार्म में बाहर से आने वाले सामान जैसे अण्डे की ट्रे, पिंजरे, अन्य उपकरण आदि को कीटाणु रहित कर उपयोग में लेवें।

- ❒ कुक्कुट फार्म परिसर में कुत्ते, बिल्ली व अन्य जंगली जानवर आदि को प्रवेश नहीं करने दिया जावे। मुर्गियों को प्रवासी पक्षी, वाटर फाउल, बतख आदि के सम्पर्क में न आने दिया जावें।

- ❒ कुक्कुट फार्म परिसर में खरपतवार की सफाई करावें व चूहों की रोकथाम के उपाय करें।

- ❒ कुक्कुट फार्म में मृत पक्षियों, संक्रमित लिटर, खराब अण्डे आदि के निस्तारण हेतु डिस्पोजल पिट् बनाकर निस्तारित करें अथवा जलाकर या गहरे गढ्ढे में कीटाणुनाशक दवा/चूने के साथ गाड़ कर नष्ट कर दिया जाना चाहिये।

रोगग्रस्त क्षेत्रों में कुक्कुट पालन हेतु ऑल इन ऑल आऊट पद्धति अपना कर कुक्कुट फार्म को पूर्ण रूप से कीटाणु रहित करना चाहिये।

- ❒ इसमें फार्म के सभी पक्षियों को एक साथ विक्रय/निस्तारित करने के तीन सप्ताह पश्चात् पुनः नया बैच लाना चाहिये।

- ❒ प्रथम सप्ताह में कुक्कुट घर का पुराना लिटर (बिछावन) बाहर निकाल कर फर्श अच्छी तरह से पानी एवं साबुन (डिटरजेंट) के घोल से साफ करना चाहिये। फर्श एवं दीवारों से बींट आदि रगड़ कर अच्छी तरह साफ करना चाहिये।

- ❒ द्वितीय सप्ताह में दीवारों एवं फर्श पर कीटाणु नाशक (क्वाटरनरी अमोनियम साल्ट के 4% क्रिसोलिक एसिड के 2.2%/ सिन्थेटिक फिनोल के 2%) घोल का छिड़काव करें। सभी दाने–पानी के बरतन व अन्य उपकरणों को भी साफ कर कीटाणु रहित करें व धूप में रखें।

- ❒ तीसरे सप्ताह में दीवारों व छत पर चूने के घोल से सफेदी करनी चाहिये। कुक्कुट घर को चारों तरफ से बन्द कर फ्यूमिगेशन करना चाहिये। 60–70 ग्राम पोटशियम परमेंगनेट (लाल दवा) में 120–150 मिलि लीटर फार्मेलिन मिलाकर प्रति 100 घन फीट क्षेत्र के लिये उपयोग करते हैं।

विषाणु जनित रोग

बर्ड फ्लू

यह इन्फ्लूऐन्जा–ए वायरस से होने वाला पक्षियों का अतिसंक्रामक रोग है। इससे पक्षियों में 100% तक मृत्यु दर हो सकती है। यह रोग मुख्यतः मुर्गियों एवं टर्की में होता है। बतख, वाटर फाउल व अन्य प्रवासी पक्षियों में भी इन्फ्लूऐन्जा वायरस का संक्रमण होने से ये रोग फैलाते हैं।

रोग कैसे फैलता है?

- इस रोग के वायरस रोगी पक्षी की लार, नाक/आँख के स्राव व बींट में पाया जाता है।
- रोगी पक्षी के सीधे सम्पर्क से अथवा संक्रमित बींट व नाक/आँख के स्राव के संपर्क में आये व्यक्ति, आहार, पानी, उपकरणों आदि से यह रोग फैलता है।
- रोग के संक्रमण पर 3–5 दिन में लक्षण दिखाई देते हैं।

रोग के लक्षण :

- अचानक अधिक संख्या में पक्षियों की मृत्यु (100% तक)।
- पक्षी सुस्त होकर खाना पीना बन्द कर देते हैं।
- अण्डा उत्पादन में अत्यधिक कमी।
- पक्षी के तीव्र जुखाम व नासाछिद्र व आँख से स्राव।
- पक्षी के सिर व गर्दन पर सूजन आना।
- कलंगी व लटकन पर सूजन एवं नीलापन आ जाता है।

उपचार :

बर्ड फ्लू रोग का उपचार नहीं है, अतः बचाव ही उपचार है।

बर्ड फ्लू होने की संभावना की स्थिति में कुक्कुट पालक क्या करें?

* रोग की जाँच हेतु पशु चिकित्सक के द्वारा सैम्पल भिजवायें।
* जाँच रिपोर्ट आने तक फार्म पर किसी भी व्यक्ति (कुक्कुट पालक के अतिरिक्त), वाहन आदि को प्रवेश न करने देवें।
* कुक्कुट फार्म पर रोग की संभावना होने पर पक्षियों को क्वारन्टाइन में रखना चाहिये।
* फार्म से पक्षी, अण्डे, लिटर, उपकरण आदि का आवागमन/बेचान न करें।
* जैव सुरक्षा व कीटाणु नाशन के सभी उपाय करें।
* फार्म पर कार्य करने वाले व्यक्ति को मास्क डिस्पोजेबल कपड़े, शू–कवर, ग्लव्ज आदि पहनकर कार्य करना चाहिये एवं कार्य उपरान्त फार्म के बाहर निकलने पर इन्हें निस्तारित कर देना चाहिये एवं स्वयं की सफाई एवं कीटाणुनाशन प्रक्रिया का ध्यान रखना चाहिये।
* रोग की पुष्टि होने पर पशुपालन विभाग के निर्देशानुसार सभी पक्षियों, अण्डों, लिटर, दाने आदि का निस्तारण कराकर पूर्ण कीटाणुनाशक प्रक्रिया को अपनायें।

रानीखेत रोग
(न्यूकेसल डिजीज)

यह बीमारी सभी उम्र की मुर्गियों व टर्की में समान रूप से पाई जाती है। यह एकदम तीव्र गति से फैलने वाली, भयंकर छूतदार बीमारी है, जिसमें तंत्रिका तंत्र व श्वसन तंत्र दोनों प्रभावित होते हैं।

कारण – यह रोग वाइरस (मिक्सोवाइरस) जनित है। इस रोग का इन्क्यूबेशन पीरियड (रोग के विषाणु शरीर में प्रवेश के समय से लेकर रोग के लक्षण स्पष्ट होने तक का समय) 5 से 7 दिन है।

प्रसार – वायु द्वारा।

– बीमार मुर्गियों के साथ स्वस्थ पक्षी रखने पर।

– मृत मुर्गी को, खुले में छोड़ने से।

– बीमार पक्षियों के आहार व पानी के बरतनों एवं संक्रमित लिटर द्वारा।

– मुर्गी शाला के पास रोगी जंगली पक्षियों द्वारा।

– मुर्गियों की देखभाल करने वाले मनुष्यों तथा आगन्तुकों द्वारा।

– रोगी पक्षियों की बींट, आँसू, नाक एवं मुंह से निकलने वाले स्राव से।

लक्षण – इस रोग के चार रूप होते हैं:–

(i) विरूलेंट फार्म या उग्र रूप (एशियन टाईप)

– इस अवस्था में मृत्यु दर 100% तक हो सकती है।

– बीमारी 3–4 दिन तक रहती है तथा कभी–कभी एक ही दिन में सब मुर्गियाँ मर जाती है।

- इस अवस्था में तेज बुखार होता है।
- मुर्गियों को श्वास लेने में कष्ट होता है और मुँह खोलकर श्वास लेती है तथा श्वास के साथ विशेष आवाज होती है।
- असामान्य अण्डे एवं अण्डा उत्पादन में कमी हो जाती है।

(ii) मिसोजेनिक फार्म या अपेक्षाकृत कम हानिकारक रूप (अमेरिकन टाईप)

- इस अवस्था में मृत्यु दर 5–20% तक होती है।
- श्वास लेने में कठिनाई होती है।
- हरे रंग के दस्त होते हैं।
- अण्डा उत्पादन में कमी होती है।
- पंख व पैरों में लकवा हो सकता है।

(iii) लेण्टोजनिक फार्म या कम प्रभावी रूप

- इस अवस्था में मृत्युदर बहुत कम होती है।
- हल्के श्वास रोग के लक्षण दिखाई देते हैं।
- अण्डा उत्पादन में कमी हो जाती है।

(iv) एसिम्प्टोमेटिक या अलक्षणिक फार्म

- इस अवस्था में प्रायः कम आयु के पक्षी प्रभावित होते हैं।
- इस अवस्था में लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं।

- खांसी आना,
- उल्टा चलना,
- सिर लटकाकर दोनों टांगों के बीच रखना आदि लक्षण देखे जा सकते हैं।

उपचार – इस रोग का कोई उपचार नहीं है। अतः वैक्सीनेशन (टीकाकरण) आवश्यक है।

टीकाकरण – आर.डी. की रोकथाम के लिये एफ, टाईप, लसोटा, आर2बी और एन.डी. किल्ड आदि वैक्सीन का उपयोग किया जाता है। लेयर एवं ब्रीडिंग स्टॉल की मुर्गियों में अण्डे शुरू होने के समय एन.डी. किल्ड वैक्सीन का उपयोग रोग की रोकथाम हेतु बहुत उपयोगी है। साथ ही 7 दिन, 28 दिन व 10 सप्ताह की उम्र में भी टीकाकरण किया जाना चाहिये।

- ब्रायलर में 7 दिन की उम्र में आर.डी. का टीकाकरण किया जाना पर्याप्त है।

फाउल पॉक्स

यह छोटी–छोटी फुंसियों की बीमारी है जो कलंगी, गलकम्बल, आँख की पुतलियों और सिर की त्वचा पर हो जाती है। यह रोग हर उम्र की मुर्गियों में हो सकता है।

कारण – यह रोग वाइरस (पॉक्स वायरस) द्वारा होता है।

प्रसार – रोगी मुर्गी के सम्पर्क से रोग फैलता है।

– मच्छर, बाह्य परजीवी तथा जंगली पक्षी भी रोग प्रसारण में सहायक होते हैं।

लक्षण – यह रोग तीन प्रकार का होता है।

(i) चर्म रूप – यह सामान्य प्रकार है। इसमें कलंगी, चेहरा तथा गलकम्बल, गुदा, डैनों के भीतरी भाग में हल्के भूरे रंग के छोटे–छोटे दाने निकल आते हैं। ये बाद में पीले रंग के हो जाते हैं। तत्पश्चात् 3–4 सप्ताह बाद दाने सूखने लगते हैं।

(ii) मुख रूप – इसमें मुँह के अन्दर की झिल्ली पर दाने तथा जीभ पर छाले हो जाते हैं। मुखगुहा, गले एवं नासिका से गाढ़ा मवादयुक्त स्राव निकलता है।

– सांस लेने में कष्ट होता है।

(iii) आँख रूप – आँखों से पानी बहता है।

– आँखों व पलकों पर दाने निकलते हैं।

– तापक्रम में वृद्धि।

– आहार के प्रति अरुचि।

– अण्डा उत्पादन में कमी।

– उग्र रूप में मृत्यु भी हो सकती है।

टीकाकरण – लेयर पक्षियों में 6 से 8 सप्ताह की उम्र पर फाऊल पॉक्स रोग के बचाव हेतु विंग वेब में टीकाकरण किया जाना चाहिये।

उपचार – रोग से बचाव ही उपचार है। अतः लेयर पक्षियों में टीकाकरण आवश्यक है।

इन्फेक्शियस ब्रोन्काइटिस (आई.बी.)

यह अति तीव्र रूप की बीमारी हर उम्र के पक्षी को हो सकती है। यह अतिशीघ्र फैलने वाला श्वास रोग है। यह रोग सर्दी में अधिक होता है।

कारण – यह रोग वायरस (कोरोना ग्रुप) के कारण होता है।

– यह प्रायः चार सप्ताह से कम उम्र वाले चूजों को ज्यादा ग्रसित करता है।

प्रसार – संक्रमित उपकरणों, दाना–पानी आदि से तथा वायु द्वारा रोग फैलता है।

लक्षण – श्वांस लेने में कठिनाई तथा श्वांस में एक विशेष प्रकार की आवाज पायी जाती है जिसे गैस्पिंग राल्स कहते है।

– आँख और नाक से पानी बहता है तथा सूजन हो जाती है।

– चूजे छींकते व हांफते हुए दिखाई देते हैं।

– आहार उपभोग में कमी, एल्बुमिन पतला एवं अण्डा उत्पादन कम हो जाता है, जो 3–4 सप्ताह में सामान्य हो जाता है।

– अण्डे का असामान्य छिलका।

– अधिकांश रोगग्रस्त चूजे मर जाते हैं और जो बच जाते हैं वे इस रोग के वाहक रहते हैं।

– दस्त लक्षण।

– इस रोग के लक्षण रानीखेत रोग से मिलते हैं। किन्तु रानीखेत में मृत्युदर ज्यादा होती है तथा अण्डा उत्पादन बिल्कुल बन्द हो जाता है और साथ ही लकवे के लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं।

टीकाकरण – इस रोग की रोकथाम के लिये लेयर पक्षियों में प्रायः 21 दिन पर, 13 सप्ताह और 19 सप्ताह की आयु में टीकाकरण किया जाना चाहिये।

मैरेक्स रोग

यह एक अत्यन्त जटिल कैंसर की तरह का रोग है जो सामान्यतः धीरे–धीरे फैलकर पक्षियों के किसी भी बाहरी और भीतरी अंगों को प्रभावित कर उसके स्वाभाविक रूप में परिवर्तन कर देता है। परिणामस्वरूप पक्षी क्रमशः दुर्बल एवं कमजोर होकर मर जाता है। यह रोग 2 से 4 माह के पक्षियों में अधिक होता है।

कारण – यह रोग वायरस (हरपीज वायरस) द्वारा फैलता है।

प्रसार – मुर्गी के पंखों द्वारा रोग फैलता है।

– संक्रमित लार, मल एवं हवा द्वारा भी यह रोग फैलता है।

– मक्खी, मच्छर, बींट, लिटर तथा सम्पर्क द्वारा यह रोग फैलता है।

लक्षण – कई चूजे बिना किसी लक्षण के भी मर जाते हैं।

– अधिकांश रोगी पक्षियों के पैरों, पंखों, गर्दन आदि अंगों में आंशिक अथवा पूर्ण लकवा पाया जाता है।

– लकवे के कारण मुर्गियां आहार–पानी उचित मात्रा में ग्रहण नहीं कर पाती है।

– बीमारी का प्रथम लक्षण असाधारण पंख एवं बढोतरी है।

– रोग के क्रानिक रूप में लक्षण तीन माह की उम्र के पक्षियों में अधिक पाये जाते है। एक पैर आगे रह सकता है तथा एक मुड़ा हुआ भी रह सकता है। पंख गिरे हुए रहते हैं।

– पक्षी लंगड़ा कर चलता है।

– श्वास लेने में कठिनाई तथा क्रॉप भरी रहती है।

– आँखें सूजी व स्लेटी रंग की प्रतीत होती है (फिश आई या पर्ल आई)।

– अन्दरूनी आंगों में सूक्ष्म से लेकर बड़े ट्यूमर पाये जाते हैं।

टीकाकरण – एक दिन के चूजे को हेचरी में ही इस रोग से बचाव हेतु टीकाकरण किया जाना चाहिये।

– इस रोग का टीका ब्रायलर व लेयर दोनों प्रकार की मुर्गियों में लगाना चाहिये।

गम्बोरो रोग

यह भयंकर छूतदार बीमारी है जो कि चूजों में ज्यादा होती है। सामान्यतया 2 सप्ताह से 15 सप्ताह के पक्षियों में यह रोग होता है।

कारण – यह रोग वायरस (रियो वायरस) द्वारा होता है।

प्रसार – यह भयंकर छूतदार बीमारी है जो कि कुक्कुटशाला में उपस्थित वायरस के कारण व सम्पर्क द्वारा फैलता है।

– वायरस मुँह, आँख तथा श्वसन तंत्र द्वारा शरीर में पहुंचता है।

– संक्रमित लिटर, पक्षी, मनुष्य तथा उपकरणों द्वारा भी रोग प्रसारित होता है।

लक्षण – रोग के लक्षण 3–6 सप्ताह की आयु में प्रकट होते हैं।

– पक्षी सुस्त हो जाते हैं।

– भूख में कमी हो जाती है।

– पक्षियों के शरीर में पानी की कमी, प्यास अधिक लगती है और कंपकंपी आती है।

– पंख अव्यवस्थित दिखाई पड़ते हैं।

– बीमार पक्षी वेंट को बार–बार प्रिक करता है।

– चूने जैसी सफेद बींट होती है।

– मृत्युदर 20% तक हो जाती है तथा 5–10 दिन बाद लक्षण खत्म हो जाते हैं।

टीकाकरण – गम्बोरो रोग का वायरस अत्यन्त कठोर वायरस है। इसके संक्रमण को मुर्गी फार्म से दूर करने में काफी परेशानी आती है। क्लोरीन डिसइन्फैक्टैन्ट से ये वायरस अत्यधिक प्रभावित होते हैं। अतः टीकाकरण आवश्यक है।

– रोग की रोकथाम के लिये चार वैक्सीन स्ट्रेन–माइल्ड, इन्टर मीडियेट, इन्वेसिव इन्टर मीडियेट (लेयर और ब्रायलर के लिये) एवं हॉट स्ट्रेन वैक्सीन का उपयोग होता है। वैक्सीन का निर्णय पशु चिकित्सक की सलाह पर एरिया विशेष में रोग की स्थिति के आधार पर करना चाहिये।

इन्फेक्शीयस लेरिंगो ट्रेकिआईटिस (आई.एल.टी.)

यह भयंकर छूतदार कण्ठरोधक एवं शीघ्र फैलने वाली श्वास की बीमारी है। यह रोग रानीखेत से मिलता–जुलता है। यह अधिकतर 5–10 माह की उम्र की मुर्गियों में ज्यादा होता है।

कारण – यह रोग वायरस (हर्पीज वायरस) द्वारा होता है।

प्रसार – संक्रमित, दाना–पानी, उपकरण और रोग ग्रसित मुर्गियों के सम्पर्क से फैलता है।

– हवा के माध्यम से भी यह रोग फैलता है।

– ठीक हुई मुर्गी रोग का स्त्रोत बनी रहती है।

लक्षण – यह बीमारी तीव्र, अनुतीव्र तथा जीर्ण रूप में होती है।

– नासाछिद्र एवं आँखों से मवादयुक्त स्त्राव निकलता है।

– रोगग्रस्त पक्षी खाँसते व छींकते हैं और अधिकतर रात्रि में उन्हें श्वास लेने में कठिनाई होती है।

– उग्र रूप में पक्षी हाँफते हैं। गर्दन को आगे की और बढ़ाकर सिर को ऊपर उठाकर तथा चोंच खोलकर मुँह से साँस लेते हैं।

– एक विशेष प्रकार की आवाज करते हैं तथा खाँसी के साथ रक्तरंजित म्युकस बाहर आता है। अधिकांश मुर्गियाँ दो सप्ताह में ठीक हो जाती है।

टीकाकरण – रोग से बचाव हेतु लाइव वैक्सीन किया जाना उपयोगी है।

लीची रोग

यह चूजों की एक संक्रामक बीमारी है, जिसमें मुर्गियों का यकृत व दिल प्रभावित होता है। मृत्यु दर 100 प्रतिशत तक हो सकती है।

कारण – यह बीमारी विषाणु (एडीनो वायरस समूह) जनित है।

प्रसार – इस बीमारी का प्रसार खाने–पीने के बर्तनों द्वारा होता है।

लक्षण – यह बीमारी मुख्यतः 3–6 सप्ताह के उम्र के चूजों में ज्यादा होती है।

– यह ब्रॉयलर चूजों में अधिक होता है।

– चूजे सुस्त एवं उदास हो जाते हैं।

– इस बीमारी में चूजों में बिना किसी लक्षण के अत्यधिक मृत्यु दर हो जाती है।

– चूजे आँख बंद कर सीने एवं चोंच को जमीन पर रखकर एक विशेष मुद्रा में बैठते हैं।

– दिल के चारों ओर जैलीनुमा पानी भर जाता है तथा दिल (हृदय) छिले हुए लीची के फल के सदृश्य दिखाई देता है।

– मुर्गी के गुर्दे भी खराब हो जाते हैं।

– मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।

टीकाकरण – लीची रोग से बचाव व रोकथाम हेतु एच.पी. वैक्सीन का उपयोग 7 दिन के चूजे में किया जाना चाहिये।

जीवाणु जनित रोग

इन्फैक्शीयस कोराइजा

यह मुर्गियों की एक संक्रामक बीमारी है, जिसमें मुख्यतः 12–20 सप्ताह तक के पक्षी अधिक प्रभावित होते हैं। इसमें मुर्गियाँ अधिक संख्या में रोग ग्रसित होती हैं, परन्तु मृत्यु दर 50% तक हो सकती है।

कारण – यह रोग हीमोफिलिस–पेरागेलिनेरम नामक जीवाणु द्वारा होता है।

प्रसार – रोग ग्रसित मुर्गियों के सम्पर्क द्वारा यह रोग फैलता है।

– खाने–पीने के बर्तनों द्वारा।

– तेज हवा, नमी, टीकाकरण, स्थान परिवर्तन, पेट में कीड़े आदि कारणों से तनाव (स्ट्रेस) होने के कारण कोराइजा रोग हो जाता है।

– विटामिन 'ए' की कमी से भी यह रोग हो सकता है।

लक्षण – छींक आना तथा नासिका छिद्रों का बन्द होना।

– नाक पर बदबूदार चिकना तरल पदार्थ पाया जाता है, जो नाक के चारों ओर जमा होकर सूख जाता है।

– आँखों में भी पीले रंग का तरल जम जाता है, जिससे आँखों के चारों ओर सूजन आ जाती है। यह सूजन कलंगी तथा गलकम्बल तक फैल जाती है।

– श्वांस नली में तथा तालू पर भी गाढ़ा पदार्थ जमा हो जाने के कारण मुर्गियों को साँस लेने में बड़ा कष्ट होता है।

– चोंच खोलकर श्वास लेते हैं व एक विशेष प्रकार की आवाज करते हैं।

– अण्डा उत्पादन में कमी।

टीकाकरण – प्रायः कोराइजा का पहला टीका लेयर पक्षियों में ग्रोवर मुर्गी को केज में भेजने से पहले लगाना चाहिये।

– रोग प्रकोप होने वाले क्षेत्र में 12 सप्ताह की आयु पर वैक्सीन लगाया जाता है, जिसे 4–5 सप्ताह पश्चात् पुनः लगाना चाहिये।

उपचार – कुक्कुट फार्म पर रोग की जानकारी होने पर तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर निदान करवाये। पशु चिकित्सक की सलाह पर एन्टीबायोटिक्स का उपयोग कर रोग पर नियंत्रण किया जा सकता है।

फाउल कॉलरा

यह एक संक्रामक बीमारी है। इसमें एक साथ कई मुर्गियाँ रोग ग्रसित होती हैं तथा एक साथ बहुत–सी मुर्गियाँ मर जाती हैं।

कारण – यह रोग पास्चुरेला मल्टोसिडा नामक जीवाणु द्वारा होता है।

प्रसार – रोगी पक्षियों के सम्पर्क में आने से।

– एक ही जगह पर अत्यधिक मुर्गियों को रखने तथा खाने–पीने के बर्तनों द्वारा।

लक्षण – तीव्र रूप में एक साथ कई मुर्गियाँ बैचेन हो जाती है।

– शरीर के तापमान में बढ़ोतरी।

– रोगी मुर्गियों को अधिक प्यास लगती है।

– हरे–पीले रंग के दस्त होते हैं।

– कलंगी तथा गलकम्बल में सूजन आ जाती है तथा उनका रंग बैंगनी हो जाता है।

– साँस लेने में तकलीफ होती है।

टीकाकरण – रोग प्रकोप वाले क्षेत्र में 12 सप्ताह की आयु पर वैक्सीन लगाया जाता है। जिसे चार पांच सप्ताह पश्चात् पुनः लगाना चाहिए।

उपचार – कुक्कुट फार्म पर रोग की जानकारी होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर निदान करवायें। पशु चिकित्सक की सलाह पर एंटीबायोटिक्स का उपयोग कर रोग पर नियंत्रण किया जा सकता है।

पुलोरम रोग
(बेसिलरी व्हाइट डायरिया)

यह तेजी से फैलने वाला भयंकर संक्रामक रोग है, जिससे चूजों में 50–100% तक मृत्यु हो सकती है। इसमें भूख–प्यास की कमी एवं लसीले चिपकाऊ दस्त हो जाते हैं।

कारण – यह रोग सालमोनेला नामक जीवाणु के कारण होता है।

प्रसार – यह रोग इस जीवाणु से ग्रसित अण्डों द्वारा प्रसारित होता है।

– संक्रमित बींट द्वारा, प्रदूषित अण्डे के छिलकों से यह रोग फैलता है।

– रोग ग्रसित मुर्गियों के सम्पर्क से।

– प्रदूषित दाना–पानी या लिटर द्वारा इस रोग का प्रसार होता है।

लक्षण – चूजों को प्यास अधिक लगती है।

– आहार उपभोग में कमी।

– श्वास लेत समय हाँफते हैं और अधिकतर चूजे ऊँघते हुए प्रतीत होते हैं।

– रोगी पक्षियों के पंख बिखरे–बिखरे व लटके रहते हैं और कॉम्ब पर पीलापन नजर आता है।

– सफेद भूरे दस्त लग जाते हैं तथा गुदा के पास मल लगा हुआ दिखाई देता है। मल त्याग के दौरान पक्षी का दर्द से चिल्लाना (थ्रिल क्राई)।

– पक्षी ब्रूडर में एकत्रित रहते हैं।

उपचार – चूजे ऐसी हैचरी से लेने चाहिये, जो पुलोरम जीवाणु से मुक्त रहे।

– कीटाणुनाशन प्रक्रिया को अपनाये। रोग के निदान पश्चात् पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार कराये।

ई–कोलाई संक्रमण

पक्षियों का यह एक जीवाणुजनित रोग है, जिससे कई प्रकार के संक्रमण पक्षियों में हो सकते हैं। इस जीवाणु द्वारा कोली बेसीलोसिस, एगपेरीटोनाइटिस, एयर सेक्यूलाइटिस, सालपिंजाइटिस, हजारे डिजीज आदि रोगों के लक्षण देखे जा सकते हैं। सामान्यतः यह जीवाणु पशुओं, पक्षियों एवं मनुष्यों आदि के पेट एवं आँतों में पाया जाता है। स्ट्रेस एवं अन्य अवस्थाओं में होस्ट को संक्रमित कर विभिन्न रोग प्रकट करता है।

कारण – एश्केरिया कोलाई, ग्राम नेगेटिव रोड के आकार के जीवाणु।

प्रसार – इस रोग का प्रसार अण्डों के माध्यम से हो सकता है, जिससे चूजों में अत्यधिक मृत्यु दर देखी जा सकती है।

– लिटर व बींट रोग को फैलाने में सहायक है।

– मुंह एवं हवा के माध्यम से यह संक्रमण फैल सकता है।

लक्षण – **कॉलीसेप्टीसीमिया–** रक्त में इस जीवाणु के मिलने से यह अवस्था प्रकट होती है एवं इसमें सर्वप्रथम गुर्दों एवं हृदय की झिल्ली में सूजन तथा हृदय में स्ट्रा कलर का तरल पदार्थ मिलता है।

– **एयरसेक्यूलाइटिस–** रक्त से अथवा सीधे ही श्वांस नली से यह जीवाणु फेफड़ों में पहुंचकर एयरसेक्यूलाइटिस नामक रोग प्रकट करता है, जिसमें उत्पादन कम होना, खांसी आना तथा रेटलिंग आदि लक्षण दिखलाई देते हैं।

– **सेप्टिसीमिया–** के कारण ओवीडक्ट में भी यह संक्रमण पहुंच जाता है, जिससे अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।

– चूजे की नाभि द्वारा संक्रमण प्रवेश कर ओमफलाइटिस रोग के लक्षण दिखलाता है, जबकि एयरसेक्यूलाइटिस के प्रभाव के साथ पेरेटोनियम झिल्ली में सूजन पाई जाती है, जिसे एगपेरीटोनाइटिस कहते हैं।

– **एंट्राइटिस–** ई. कोलाई का आंतों में संक्रमण एंट्राइटिस नामक रोग पैदा करता है, जिससे आंतों के अन्दर की सतह पर सूजन पाई जाती है व पक्षी पतली बींट जैसे लक्षण करता है। इस अवस्था में आंतों में अन्य संक्रमण जैसे कि आइमेरिया प्रजाति के लगने की संभावना रहती है।

– **कोलोग्रेन्यूलोमा अथवा हजारे डिजीज–** आंतों एवं लीवर पर जगह–जगह ट्यूमर जैसी गांठें दिखाई पड़ती हैं। इस अवस्था को कोलोग्रेन्यूलोमा कहते हैं।

उपचार – कुक्कुट फार्म पर रोग की जानकारी होने पर तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर निदान करवाये। पशु चिकित्सक की सलाह पर ऐन्टीबायोटिक्स का उपयोग कर रोग पर नियंत्रण किया जा सकता है।

फाउल टायफॉइड

यह व्यस्क मुर्गियों में हरे–पीले रंग के दस्तों की छूतदार बीमारी है। यह पुलोरम से मिलती–जुलती बीमारी है।

कारण – सालमोनेला गैलिनेरम नामक जीवाणु के कारण यह रोग होता है।

प्रसार – दूषित खाना–पानी के कारण मुर्गियाँ इस रोग से ग्रसित होती है।

– यह रोग अण्डे में संक्रमण द्वारा छोटे चूजों में फैलता है।

– इस रोग का प्रसार बीमार मुर्गियों से स्वस्थ मुर्गियों में तथा एक–दूसरे के सम्पर्क द्वारा होता है।

लक्षण – पंखों का अव्यवस्थित होना।

– आहार उपभोग में कमी होना एवं प्यास बढ़ जाती है।

– मुर्गियों का एकान्त स्थान में रहना।

– हरा–पीला दस्त होना।

– आंतों व यकृत में सूजन के कारण एक–दो हफ्ते में मृत्यु हो जाती है।

उपचार – ब्रीडिंग की मुर्गियों में इस रोग के नियंत्रण के लिये अंडे उत्पादन के 20 प्रतिशत के स्तर पर प्रत्येक मुर्गी का रक्त पुलोरम एन्टीजन द्वारा टैस्ट किया जाता है, जो पक्षी पोजीटिव निकलते हैं, उनको ब्रीडिंग के लिये प्रयोग में नहीं लेना चाहिये।

– पशु चिकित्सक की सलाह पर उचित औषधि द्वारा उपचार किया जा सकता है।

मुर्गियों में परजीवी रोग

अनेक प्रकार के परजीवी मुर्गियों के शरीर में निवास करते हैं, जोकि मुर्गियों के रक्त का शोषण करते हैं। इनमें बैचेनी पैदा करते हैं तथा विविध प्रकार के रोग फैलाने में सहायक होते हैं। इन्हें दो श्रेणियों में बांटा गया है–

(1) **बाह्य परजीवी–** जुऐं, चिचड़ी, माइट्स् एवं पिस्सू।

(2) **आंतरिक परजीवी–** प्रोटोजोआ, कृमि (हेलमिन्थ)।

(i) **जुऐं (लाइस)–** ये प्रायः सभी स्थानों पर मुर्गियों में अधिकतर पंखों के नीचे रहती है। मनुष्यों के जूं से मिलती–जुलती है।

लक्षण

- पक्षी सो नहीं पाते हैं।
- व्याकुलता के कारण पंखों को झुकाए रहते हैं।
- अण्डा उत्पादन घट जाता है।
- मुर्गियों के वजन में कमी हो जाती है तथा पक्षी दुर्बल हो जाते हैं।

(ii) **चीचड़ (टिक्स)–** मुर्गियों को प्रभावित करने वाली किलनी को सोफ्ट टिक या अरगस परसिकस टिक कहते हैं। ये मुर्गियों में चीचड़ी बुखार या स्पाइरोकीटोसिस फैलाते हैं। इस ज्वर के निम्न लक्षण हैंः–

- पक्षी के शरीर का तापक्रम बढ़ जाता है।
- पक्षियों में खुजली एवं बैचेनी हो जाती है।
- कलंगी व गलकम्बल पीले पड़ जाते हैं।
- वृद्धि रुक जाती है।
- अण्डा उत्पादन में कमी हो जाती है।

(iii) **माइट्स** : इन्हें स्केली लेग माइट्स भी कहते हैं, जो कि पैरों के स्केल्स में घुसकर रक्त चूसती है।

लक्षण

- प्रभावित पक्षियों का तापक्रम अधिक हो जाता है।
- माइट्स के पैरों में काटने से जलन व व्याकुलता होती है।
- पैरों में विरूपता आ जाती है।
- पक्षी लंगड़ा कर चलते हैं।
- इसे शल्क रोग या स्केलीलेग डीजीज भी कहते हैं।

खटमल (बग्स या पिस्सू) : ये गहरे खाकी या काले रंग के होते हैं। ये पक्षियों के शरीर से रक्त चूसते हैं तथा ठण्डे मौसम में अधिक विकसित होते हैं।

लक्षण

- खुजली होती है तथा बैचेनी रहती है।
- खून की कमी हो जाती है तथा उनकी वृद्धि कम हो जाती है।
- अण्डा उत्पादन में कमी हो जाती है।
- इनकी संख्या अधिक होने पर, कम आयु के चूजे मर सकते हैं।

रोकथाम

- गैमेक्सीन 5 प्रतिशत अथवा डी.डी.टी. 1 भाग में 5 भाग राख मिलाकर छिड़काव करें। डी.टी.टी. 1 भाग में 20 भाग राख मिलाकर मुर्गियों के शरीर पर मले।
- मुर्गियों को टिक्स से वंचित करने के लिये उन्हें 0.1 प्रतिशत मैलाथियॉन और 0.025 प्रतिशत डाइजिनॉन या 0.55 प्रतिशत बी.एच.सी के एक्वस सोलूशन में डूबोना चाहिये।
- कुक्कुटशाला के चारों ओर एक पतली नाली में मिट्टी का तेल व पानी के घोल को भरकर रखें ताकि खटमल व किलनियां आदि न आ सकें।
- दीवारों में दरार या छेद न रहने दें।

कोक्सीडियोसिस

यह प्रोटोजोआ जनित रोग है, जिसके कारण चूजों में अधिक मृत्यु दर तथा पठोरों में देरी से अण्डा देने की अवस्था तथा व्यस्क मुर्गियों में अण्डा देने की क्षमता में कमी आती है।

यह नौ प्रकार की होती है, जिनमें से निम्न दो प्रकार ज्यादा हानिकारक होता है:-

(1) **सीकल कोक्सीडियोसिस** : यह रोग 2-4 सप्ताह की उम्र के चूजों को अधिक होता है।

कारण – इसका कारण आइमेरिया टेनेला नाम प्रोटोजोआ है।

लक्षण – भूख लगना।

– प्यास की अधिकता।

– ऊंघना।

– खूनी दस्त तथा सीकम खून से भरा होता है।

– मृत्यु दर ज्यादा होती है।

(2) **आंतों की कॉक्सीडियोसिस** : यह रोग 4 से 10 सप्ताह वाले चूजों को होता है, परन्तु सभी उम्र की मुर्गियों में यह हो सकता है।

कारण – इस रोग का कारण आइमेरिया नेकट्रक्स प्रोटोजोआ है।

लक्षण – प्रभावित बच्चों को अधिक प्यास लगती है।

– भूख में कमी।

– आँखें बंद तथा ऊंघना।

– पीला या खूनी दस्त होना।

- बींट करने में कष्ट होना।
- चूजे कमजोर हो जाते हैं।
- मृतक पक्षी की आँत में खूनी धब्बे पाये जाते हैं।
- कमजोरी तथा पैर अयोग्य हो जाते हैं।

रोकथाम

- डीप लीटर पद्धति से बिछावन को सदैव सूखा रखें। यदि बिछावन गीला हो जाये तो उसे तुरन्त हटा देवें।
- बिछावन को सप्ताह में दो बार अवश्य पलटी देवें। बाह्य परजीवियों को नियंत्रित रखें।
- कॉक्सीडिओसिस रोग की जानकारी मिलने पर तुरन्त पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार करें।

एस्परजिलोसिस

यह रोग मुर्गियों व टर्की दोनों में होता है। चूजे पैदा होते ही या हैविंग के समय इस रोग से ग्रसित हो जाते हैं। यह मुख्यतया श्वसन तंत्र से संबंधित होता है, परन्तु रक्त द्वारा अन्य अंगों को भी प्रभावित करता है।

यह नौ प्रकार की होती है, जिनमें से निम्न दो प्रकार ज्यादा हानिकारक होता है :–

कारण – यह रोग एस्परजिलोसिस फ्यूमिगेट्स नामक फंगस से होता है।

लक्षण – इस रोग में सभी अंग प्रभावित होते हैं, इसलिये लक्षण प्रभावित अंग पर निर्भर होते हैं।

– नवजात चूजों में यह रोग तीव्र रूप में होता है, जिससे मृत्यु दर अधिक होती है।

– तीव्र रूप को ब्रूडर न्यूमोनिया भी कहते हैं, जो कि 1–14 दिन की उम्र के चूजों में ज्यादा देखा गया है।

– तीव्र रूप में चूजों में भूख बन्द होना, श्वसन गति बढ़ना, शरीर का तापक्रम बढ़ना, बैचेनी, दस्त इत्यादि लक्षण प्रमुख है।

– पक्षियों के आंखों में भी असर होता है, आंखें सूज जाती है तथा पीला सा पानी एकत्रित हो जाता है।

– दीर्घकालीन अवस्था में, तीव्र रूप वाले ही कम असरदार लक्षण होते हैं।

रोकथाम – यह रोग फंगस के नमीयुक्त स्थानों/कूलर/बुरादे (लीटर) आदि में हो जाने से अण्डों/चूजों को संक्रमित होते हैं।

– बिछावन को गीला न होने दें व बुरादे में 1000 वर्ग फीट एरिया में 5 किलो चूना व 1 किलो बारीक पिसा हुआ नीला थोथा मिला देना चाहिए।

क्रानिक रेस्पाइरेट्री डिजीज
(सी.आर.डी.)

यह छूतदार श्वास से सम्बन्धित मुर्गियों की बीमारी है। यह रोग सभी आयु वाले पक्षियों में होता है परन्तु 4 से 8 सप्ताह की आयु के चूजों में ज्यादा होता है। इसमें पक्षियों के भार में कमी, अण्डा देने की क्षमता में 30% की कमी तथा धीरे–धीरे मृत्यु हो जाती है।

कारण – यह रोग माइकोप्लाज्मा गैलीसैप्टीकम द्वारा फैलता है। ई–कोलाई जीवाणु के संक्रमण पर यह रोग अधिक फैलता है।

प्रसार – शीत ऋतु में रोगी पक्षियों की दूषित वायु को साँस द्वारा ग्रहण करने पर फैलता है।

– रोग से ठीक हुई मुर्गियों के साथ स्वस्थ मुर्गियों को रखने पर भी यह रोग फैलता है।

– रोग ग्रसित मुर्गियों के अण्डों से भी नवजात चूजों में यह रोग फैलता है।

– पेट में कीड़े, स्थान परिवर्तन, विटामिन ए की कमी, असंतुलित आहार, नमी, ऋतु परिवर्तन, टीकाकरण आदि।

लक्षण – प्रारम्भिक लक्षण रानीखेत व आई.बी. से मिलते हैं।

– इस रोग में श्वास में कठिनाई, नाक से स्राव तथा श्वास नली में रेटलिंग की आवाज आती है।

– आहार उपयोग में कमी।

– मुर्गी कमजोर व सूख जाती है।

– अण्डा उत्पादन में कमी हो जाती है।

– बींट पतली हो जाती है।

उपचार – रोग के निदान एवं उपचार हेतु पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर रोग का नियंत्रित करें। रोकथाम के लिये मुर्गी फार्म की सामान्य प्रबन्धन व्यवस्थायें जैसे भीड़, अमोनिया, धुंआ, धूल, नमी आदि का ध्यान रखते हुए उचित कीटाणुनाशक प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिये।